हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शमला

झारखण्ड राज्य में केन्दू पत्ता के उत्पादन एवं राजस्व उत्पादन की मात्रा का अध्ययन और बेहतर प्रबंधन किए लिए विश्लेषण पर कार्यशाला का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा झारखण्ड वन विभाग द्वारा वित्तपोषित परियोजना "झारखण्ड में केन्दू की पत्तियों के वार्षिक उत्पादन की मात्रा और राजस्व उत्पन्न करने और इसके बेहतर प्रबंधन के लिए इसका विश्लेषण" का संचालन किया जा रहा है।

इस परियोजना के अंतर्गत केन्दू पत्ता के वार्षिक उत्पादन की मात्रा और राजस्व प्राप्ति से सम्बंधित आंकड़ा विश्लेषण पर विचार-विमर्श एवं मंथन हेतु दिनांक 5 जनवरी 2019 को राँची (झारखण्ड) में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें झारखण्ड वन विभाग तथा झारखण्ड राज्य वन विकास निगम के अधिकारियों, भारतीय प्रबंधन संस्थान, रांची, वन उत्पादकता संस्थान, राँची, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून तथा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला के प्रारंभ में **श्री राम भरत,** महा-प्रबंधक, झारखण्ड राज्य वन विकास निगम, राँची ने कार्यशाला के मुख्य अतिथि तथा इसमें भाग लेने आए अधिकारियों एवं सभी प्रतिभागियों का अभिनंदन तथा स्वागत किया।

श्री कुलवंत सिंह, प्रबंध निदेशक, झारखण्ड राज्य वन विकास निगम, राँची ने "केन्दू पत्ता का झारखंड राज्य में उत्पादन - एक अवलोकन" विषय पर प्रस्तुति दी। श्री सिंह ने कहा कि केन्दू पत्ता का राजस्व एक चक्रीय पैटर्न (cyclic pattern), जिसमें अक्सर पाया जाता है कि कुछ वर्षों में इसके राजस्व में वृद्धि दर्ज की जाती तथा कुछ वर्षों में कमी पाई जाती है। वर्तमान में केंदू पत्ते की मांग निरंतर कम होती जा रही है तथा राजस्व घट रहा है, पिछले कुछ वर्ष से स्थिति जस-की-तस बनी हुई है, जो कि चिंता का विषय है।

डॉ. वी.पी. तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने झारखण्ड राज्य वन विकास निगम लिमिटेड के उच्च अधिकारियों द्वारा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला को इस महत्वपूर्ण अध्ययन हेतु चुनने के लिए आभार व्यक्त किया। केन्दू पत्ता परियोजना की पृष्ठभूमि पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि केंदू के पत्ते स्थानीय समुदायों के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है और साथ ही राज्य के खजाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। उन्होंने कहा कि झारखंड राज्य वन विकास निगम लिमिटेड के उच्च अधिकारियों के साथ चर्चा के दौरान यह निर्णय लिया गया कि हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, झारखंड राज्य वन विकास निगम केन्दू पत्ता के उत्पादन से संबंधित पिछले उपलब्ध आंकड़ों के साथ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए एक विस्तृत प्रस्ताव प्रस्तुत करे। प्रस्तावित अध्ययन के मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न समय में उत्पन्न, उत्पादन और राजस्व के स्वरूप/ पैटर्न का विश्लेषण करने के लिए, उत्पादन और राजस्व का समय श्रृंखला विश्लेषण, उपलब्ध स्थानीय आंकड़ों के संबंध में उत्पादन का सहसंबंध खोजना, प्रबंधन प्रयासों जैसे प्रबंधन प्रभाव, पेड़ का ठूँठ निकलने तथा जलाने के समय का आकलन तथा भविष्य की उपज प्रक्षेपण और उसकी मॉडलिंग तैयार करना है। डॉ. तिवारी ने झारखण्ड राज्य वन विकास निगम लिमिटेड से गुणवत्ता आधारित बिक्री, मौसम के प्रभाव, जैविक हस्तक्षेप से संबधित आंकड़े भी उपलब्ध करवाने का आग्रह किया ताकि इन आकड़ों को अंतिम रिपोर्ट/ प्रतिवेदन में समायोजित कर योजनाकारों को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि केंदू के पत्तों के बारे में उपलब्ध जानकारी से पता चलता है कि उत्पादन के हिसाब से वर्षवार उत्पादन और राजस्व और भूमि क्षेत्र के संबंध में आंकड़ों में बहुत परिवर्तनशीलता है। उत्पादन और राजस्व की परिवर्तनशीलता स्थानीय आंकड़ों और अन्य जलवायु कारकों में भिन्नता हो सकती है। मध्य प्रदेश, ओडिशा और महाराष्ट्र राज्य प्रमुख केंदू पत्ता के उत्पादक राज्य हैं, जो सीधे तौर पर इन राज्यों के राजस्व को प्रभावित करती हैं।

श्री एल.आर. सिंह, प्रधान मुख्य अरण्यपाल, झारखण्ड जैव-विविधतता बोर्ड, रांची ने ने इस अवसर पर अपने प्रस्तुति के माध्यम से बताया कि केन्दू पत्ता के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन एवं राजस्व प्राप्ति पर प्रकाश डालते हुए अपने झारखण्ड राज्य वन विकास निगम के प्रबंध निदेशक के कार्यकाल का अनुभव साँझा किया। उन्होंने बताया कि केन्दू पत्ता का राजस्व केन्दू पत्ता की मांग तथा अन्य राज्यों के उत्पादन पर भी निर्भर करता है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि केंदू पत्ता का तुड़ान करने वाले लोगों को इसका उचित लाभ मिलना चाहिए।

श्री एच.एस. गुप्ता, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (अनुसंधान एवं प्रशिक्षण), झारखण्ड वन विभाग ने झारखंड में वार्षिक केंदू के उत्पादन की मात्रा के महत्व पर बोलते हुए कहा कि झारखण्ड राज्य में राजस्व सृजन और स्थानीय लोगों की आजीविका के लिए केंदू उत्पादन का विशेष महत्त्व है। उन्होंने केंदू पत्ता के सतत उत्पादन की आवश्यकता पर बल दिया है।

श्री एस.एस. बधावन, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (विकास) ने राज्य वन विकास निगम लिमिटेड तथा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा इस महत्वपूर्ण विषय पर कार्यशाला आयोजन की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि इस आयोजन से योजनाकारों को अवश्य ही महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि **श्री पी.सी. मिश्र,** अपर प्रधान मुख्य अरण्यपाल, झारखण्ड वन विभाग ने अपने संबोधन में कार्यशाला आयोजकों को इस महत्वपूर्ण विषय पर कार्यशाला के आयोजन हेतु बधाई दी तथा कहा कि केन्दू पत्ता राजस्व और आजीविका के लिए अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में झारखण्ड में इसका वृक्षारोपण नहीं किया जाता है। उन्होंने झारखण्ड राज्य की वर्तमान परिदृश्य पर बात करते हुए कहा कि राज्य में केंदू के वृक्ष बहुत पुराने हो गए हैं जिससे उन पर पत्तियां आने की मात्रा में भी निरंतर कमी आ रही है इसलिए उन्होंने झारखण्ड वन विभाग से केन्दू के वृक्षारोपण पर ध्यान देने की बात की। उन्होंने वन विभाग वनों में केन्दू पत्ते के वृक्षारोपण पर ध्यान देने तथा इसकी उत्पादन में वृद्धि के निरंतर प्रयास की आवश्यकता पर बल दिया तथा।

डॉ. संजय सिंह, वैज्ञानिक, वन उत्पादकता संस्थान, राँची ने उनके संस्थान द्वारा केंदू पत्ता पर किए गए अनुसंधान एवं अध्ययन पर प्रस्तुति दी तथा कहा कि केन्दू पत्ता की उत्पादकता में मात्रात्मक और गुणात्मक सुधार होना चाहिए।

श्री संजीव कुमार, उप-अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने झारखंड राज्य वन विकास निगम द्वारा वर्ष 2002 से वर्ष 2017 तक तेंदू पत्ता के उत्पादन तथा इसके विपणन से सम्बंधित उपलब्ध करवाए गए आंकड़ों के आधार पर प्रत्येक वन मण्डल का विश्लेषण पर प्रस्तुति दी।

उपरोक्त प्रस्तुतियों के पश्चात, तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया जिसके पैनेलिस्ट श्री एच. एस. गुप्ता, डॉ. वी.पी. तिवारी, डॉ. नितिन कुलकर्णी, डॉ. रमण नौटियाल, प्रोफेसर प्रीती राय तथा श्रीमती मयंक ज्योत्स्ना सोनी थे। इस सत्र के दौरान "वार्षिक केंदू पत्तियों के उत्पादन एवं राजस्व का प्रारंभिक विश्लेषण" पर दी गई विभिन्न प्रस्तुतियों पर पर विस्तार से चर्चा तथा विचार-विमर्श किया गया। कार्यशाला में केन्दू पत्ता से सम्बंधित वार्तालाप में विभिन्न वक्ताओं ने महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए तथा आयोजकों ने इसे एक सफल प्रयास बताया।

भारतीय प्रबंधन संस्थान, रांची की प्राध्यापक, मयंक ज्योत्स्ना सोनी तथा प्रीती रॉय ने अपने संबोधन में कहा कि केन्दू पत्ते की गुणवत्ता बढाएं तथा कहा कि विपणन, मांग पर आधारित होता जो कि तेंदू पत्ता के सम्बन्ध में वर्तमान में कम है, इसलिए निगम को इस दिशा में विशेष प्रयास की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के अंत में श्री सत्य प्रकाश नेगी, अरण्यपाल तथा प्रभाग प्रमुख, विस्तार प्रभाग, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की इस कार्यशाला से प्राप्त होने वाली संस्तुतियों से योजनाकारों को भविष्य में केन्दू पत्ता पर तैयार की जाने वाली कार्य-योजना में अत्यंत लाभकारी साबित होगी।

चर्चा के दौरान मुख्य संस्तुतियां निम्नलिखित है:

- गुणवत्ता आधारित बिक्री, मौसम के प्रभाव, जैविक हस्तक्षेप तेंदू पत्ता से संबधित और अधिक आंकड़े उपलब्ध करवाने पर सहमति प्रकट की गई।
- पड़ौसी राज्यों के व्यापार रहस्यों के आंकड़े भी एकत्रित किए जाएँ।
- इस विषय पर एक विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन के लिए एक अलग से परियोजना तैयार की जाए, जिसमें सभी केन्दू पत्ता उत्पादक मण्डलों में सैंपल प्लाट लगा कर प्राप्त आंकड़ो पर आधारित रिपोर्ट तैयार की जाए।
- राज्य में केन्दू पत्ता की बिक्री प्रथाओं के बारे में उपलब्ध आंकड़ों/ डाटा सांझा करने हेतु सहमति बनी।
- राज्य में केन्दू पत्ता का आरक्षित मूल्य निर्धारण करने हेतु तकनीक विकसित करने पर बल दिया गया।